अरविन्द कुमार त्रिपाठी

द्वारा

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान

Backeardness - Suicide, Causes & solution

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

अध्याय शीर्षक	पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Backeardness - Suicide, Causes & solution**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

		बुन्देलखण्ड के कुछ आन्कड़े –2018
1	कुल आबादी	लगभग 3 करोड़ से ज्यादा
2	निरक्षरता	कुल आबादी का 40प्रतिशत निरक्षर
3	पलायन	बेरोजगारी की मार से लगभग 60लाख से अधिक बुन्देलखण्डी अपने घरों में ताला डाल कर बड़े शहरों की ओर पलायन कर गये।
4	कृषि पर निर्भरता	85प्रतिशत आबादी
5	आत्महत्या (केवल किसानों)	25000 अब तक लगभग
6	बेरोजगारी	60प्रतिशत युवा बेरोजगार
7	पेय शुद्ध जलापूर्ति	95 प्रतिशत जलस्रोत गर्मियों में सूख जाते है, पेयजल की बडी समस्या
8	जल जनित रोग	60 70प्रतिशत आबादी प्रभावित
9	भूख	40प्रतिशत लोग चटनी रोटी खाकर गुजारा करते हैं। आधी से ज्यादा आबादी भयन्कर गरीबी से त्रस्त
10	किसानों पर कर्जा	90प्रतिशत किसान बैन्क या साहूकार के कर्ज में डूबे, प्रति किसान 1से 2 लाख रुपये तक का कर्जदार
11	भय	पूर्व में 2 दर्जन डकैत गिरोह सक्रिय थे जिनमें कुछ का खात्मा हो गया है।
12	विश्वविद्यालय	ग्वालियर, सागर, झान्सी, चित्रकूट, छतरपुर
13	मेडीकल कालेज	ग्वालियर, झान्सी, सागर, बान्दा, दतिया
14	उद्योग	राज्यों का 1.5 प्रतिशत मात्र
15	स्वास्थ्य	सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में 50 प्रतिशत स्टाफ की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी
16	प्रोद्योगिकी शिक्षा	प्रोद्योगिकी शिक्षा सन्स्थानों व उच्च शिक्षण सन्स्थाओं की कमी

उत्तर प्रदेश सरकारी विभागों की सूची

1	उत्तर प्रदेश सरकारी विभागों की सूची
2	अतिरिक्त ऊर्जा श्रोत विभाग
3	आबकारी विभाग
4	आवास विभाग
5	औद्योगिक विकास विभाग
6	अवस्थापना विकास विभाग
7	अल्पसन्ख्यक कल्याण विभाग
8	उद्यान विभाग
9	उपभोक्ता सन्रक्षण एवम् बाट माप विभाग
10	उच्च शिक्षा विभाग
11	उत्तर प्रदेश पुनर्गठन समन्वय विभाग
12	ऊर्जा विभाग
13	एन.आर.आई विभाग
14	कृषि शिक्षा एवम् अनुसन्धान विभाग
15	कृषि विभाग
16	कृषि विपणन एवम् विदेश व्यापार विभाग
17	कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग
18	कार्मिक विभाग
19	कारागार प्रशासन एवम् सुधार विभाग
20	खाद्य एवम् औषधि प्रशासन विभाग
21	खाद्य एवम् रसद विभाग
22	खादी एवम् ग्रामोद्योग विभाग

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

23	खेल विभाग
24	गृह विभाग
25	गोपन विभाग
26	ग्राम्य विकास विभाग
27	ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग
28	चिकित्सा एवम् स्वास्थ विभाग
29	चिकित्सा शिक्षा एवम् आयुष विभाग
30	चीनी उद्योग एवम् गन्ना विकास विभाग
31	दुग्ध विकास विभाग
32	धर्मार्थ कार्य
33	न्याय विभाग
34	नागरिक सुरक्षा विभाग
35	नागरिक उड्ड्यन विभाग
36	नगर विकास विभाग
37	नगरीय रोजगार एवम् गरीबी उन्मूलन विभाग
38	नियोजन विभाग
39	नियुक्ति विभाग
40	निर्वाचन विभाग
41	निजी पूंजी निवेश विभाग
42	पर्यावरण विभाग
43	पर्यटन विभाग
44	पन्चायतीराज विभाग
45	परिवहन विभाग
46	परती भूमि विकास विभाग
47	पशुधन विभाग
48	प्राविधिक शिक्षा विभाग
49	प्रशासनिक सुधार विभाग
50	प्रोटोकाल विभाग
51	पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग
52	बैकिंग विभाग
53	भाषा विभाग
54	भूतत्व एवम् खनिकर्म विभाग
55	महिला एवम् बाल विकास विभाग
56	मुख्यमन्त्री कार्यालय लोक शिकायत विभाग
57	मत्स्य विभाग
58	युवा कल्याण विभाग
59	राष्ट्रीय एकीकरण विभाग
60	राज्य योजना आयोग विभाग
61	राज्य सम्पत्ति
62	राजस्व विभाग
63	राजनैतिक पेंशन विभाग
64	रेशम विभाग
65	लघु सिन्चाई विभाग
66	लोक निर्माण विभाग
67	लोक सेवा प्रबन्धन विभाग
68	व्यवसायिक शिक्षा एवम् कौशल विकास विभाग
69	वाहय साहायतिक परियोजना

70	वस्त्रोद्योग विभाग
71	वन विभाग
72	विकलांग कल्याण विभाग
73	विधायी विभाग
74	विज्ञान एवम् प्रोद्योगिकी विभाग
75	वित्त विभाग
76	श्रम विभाग
77	शिक्षा विभाग
78	सिन्चाई एवम् जल सन्साधन विभाग
79	सन्स्थागत वित्त कर एवम् निबन्धन विभाग
80	सन्सदीय विभाग
81	समाज कल्याण विभाग
82	समन्वय विभाग
83	समग्र ग्राम्य विकास विभाग
84	सचिवालय प्रशासन विभाग
85	सहकारिता विभाग
86	सांस्कृति विभाग
87	सामान्य प्रशासन विभाग
88	सार्वजनिक उद्यम विभाग
89	स्वतन्त्रता सन्ग्राम सेनानी कल्याण परिषद विभाग
90	सतर्कता विभाग
91	सैनिक कल्याण विभाग
92	सूक्ष्म,लघु एवम् मध्यम उद्यम विभाग
93	सूचना एवम् प्रौद्योगिकी विभाग
94	सूचना विभाग
95	होमगार्डर्स विभाग

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

<u>चालीस फीसदी लोगों का सहारा है –जलाऊ लकड़ी</u>

बान्दा जिले में गरीब तबके के 40 फीसदी लोगों की रोजी रोटी वन विभाग के ईंधन में इस्तेमाल होने वाले पेड़ों की लकड़ी से चल रहा है। शहरों व कस्बों में प्रतिदिन सैकड़ों महिलायें जलाऊ लकड़ी को बेचकर अपना परिवार पाल रही है।

जन्गलों के किनारे बसे मवई, निवाइच, पपरेदा, लामा, गन्छा, ग्यौंड़ी बाबा नाला आदि के निर्धन लोगों को आजीविका चलाने का मुख्य आधार वन विभाग की जलाऊ लकड़ी बन गयी है। वनों में ईधन में इस्तेमाल होने वाले बबूल, विलायती बबूल व चिलबिल के पेड़ बहुतायत में है। इसके अलावा कचनार, काला सिरस, नीम, सुबबूल, सहजन व बबूल चारा प्रजाति के पेड़ आते है। वन विभाग के जन्गलों में शीशम, सागौन, महुआ, सिरस जैसे पेड़ों की सन्ख्या कम है। यहां पर फलदार बेल, महुआ व आम्वला के अलावा शोभादार अमलतास व नाभि जैसे वृक्षों का भी अभाव है। जन्गल के किनारे के गरीब बाशिदों को बहुतायत में पायी जाने वाली विलायती बबूल प्रजाति की लकड़ी आसानी से उपलब्ध हो रही है।

गांवों में गरीब तबके के पुरुष जहां मजदूरी में व्यस्त रहते है, वहीं इन परिवारों की महिलायें सुबह से रुखा सूखा खा पीकर जन्गलों की ओर कूच कर जाती है। जन्गलों में 80 फीसदी विलायती बबूल के पेड़ होने से महिलायें आसानी से लकड़ी काटकर गट्ठर बना लेती है। यह महिलायें प्रतिदिन तीन चार किलोमीटर पैदल चलकर शहरों में 20 से 30 रुपये (2021ई0) तक का गट्ठर लकड़ी बेच लेती है। कस्बों, शहरों में यह जलाऊ लकड़ी होटल वाले खरीद लेते है। पिछले कुछ वर्षो से वन विभाग द्वारा सड़कों के किनारे तैयार किये गये वृक्षों में अब सुबबूल के पेड़ों की भरमार देखी जा रही है।

धीरे धीरे महिलायें सड़कों के किनारे के बबूल भी काटकर उसकी लकड़ी बेचने लगी है। ग्राम मवई की रामकली, गन्छा की लक्ष्मी कहती है कि यही रोजी का सहारा है। कुल मिलाकर गरीब तबके के लोगों की आजीविका चलाने में जलाऊ लकड़ी अहम् भूमिका निभा रही है।

रोजगार की कमी की वजह से किसानों की त्राससदी बुन्देलखण्ड में लगातार जारी है और पिछलों वर्षो में सैकड़ों किसानों ने आत्महत्या कर ली है।

समस्याएं

समस्याएं अब अपने चरम पर हैं। यहां का आम आदमी अब टूट गया है। भूख, कुपोषण, बीमारी से अब यहां का किसान आत्महत्या करने को भी मजबूर हैं। लेकिन शासन और प्रशासन इन भूख से मौतों तथा आत्महत्याओं को स्वीकारने को तैयार नहीं है। यह स्वीकारने को भी तैयार नहीं है कि उनकी विकास नीतियों में कभी कोई कमी भी रह गयी है। अतः

1 बुन्देलखण्ड की अनियन्त्रित होती जा रही गरीबी और भूख को उजागर करने के लिए।
2 समस्या पर गहराई से समझ बनाने के लिए।
3 सामाजिक कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि तथा
4 जनपैरवी के उद्देश्य

अध्ययन किया जाना चाहिए।

चूंकि समस्याएं काफी पुरानी तथा गम्भीर हैं। किसानों द्वारा की जा रही उन आत्महत्याओं का सन्कलन किया जाना चाहिए, जिन लाशों का पोस्टमार्टम किया जाता है तथा जिनका रिकार्ड पुलिस विभाग में भी मौजूद हैं। साक्षात्कार और डिस्कशन किया किया जाना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र, खास कर बुन्देलखण्ड की सारी परिस्थितियां एक जैसी ही हैं। अतः सन्साधनों के मद्देनजर चित्रकूट मण्डल के 4 जनपदों बान्दा, चित्रकूट, हमीरपुर तथा महोबा जनपदों में किसानों द्वारा की गयी आत्महत्याओं का अध्ययन किया जाना है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

क्षेत्र की भौगोलिक

क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियां विन्ध्य पर्वत श्रंखला में स्थित है। यमुना तथा उसकी सहायक उत्तरवाही नदियों से यह क्षेत्र अभिसिन्चित है। पठारी तथा नदी घाटी क्षेत्र होने के कारण यहां उपजाऊ मिट्टी के विशाल क्षेत्र हैं। यहां पडुवा, काबर, मार, दोमट तथा कहीं कहीं राकड़ भूमि भी है।

वर्ष 2002 में किसानों की आत्महत्याओं का ग्राफ अचानक बढ गया।

(स्थिति की भयन्करता के मद्देनजर पन्चायत अध्ययन सन्दर्भ केन्द्र ने मुद्दे पर एक अध्ययन करने की योजना बनायी और इस अध्ययन के लिए सहभागी शिक्षण ट्रस्ट ने सहयोग का आश्वासन दिया जिसके आधार पर अध्ययन प्रारम्भ किया अध्ययन की यह रिपोर्ट 1 जनवरी 2003 से अगस्त 2006 तक का प्रकाशित की गई।)

किसान की खेती कितनी नुकसानदेह हुई, किस किसान की कितनी कम फसल हुई, यह पता लगाना कठिन ही नही वरन बेमानी भी होगा। वह इसलिए कि सरकारी आन्कड़ों में प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति आय में लगातार वृद्धि गुणात्मक वृद्धि हो रही है। इसी प्रकार वर्षा शुरू होने के पहले ही वर्षा की सम्भावना मात्र से कृषि उपज के आन्कड़े प्रस्तुत कर देते है।

इसलिए कृषि उपज वृद्धि और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि ने किसानों और गांव पर क्या प्रभाव छोड़ा इस बात की जानकारी करने की आवश्यकता महसूस की जानी चाहिए। गांव और किसान की विकास दर को जानने के लिए गांव छोड़, रोजी की तलाश में बाहर जाने वालों के आन्कड़े एकत्र किए जाने चाहिए।

पलायन

सरकार के आन्कड़ों में यह दर्ज है कि रोजी की तालाश में कितने लोग घरों में ताले डाल कर ईट भट्टा की चिमनियों के लिए अथवा सूरत और पंजाब, कमाई के लिए चले जाते है। कोई किसान अपना घर परिवार गांव कुटुम्ब छोड़कर तब जाता है जब गांव में उसका जीवन दूभर हो जाता है और उसको अपने जीवन में अन्धकार दिखाई देने लगता है। सरकार के आन्कड़ों में ऐसे कितने परिवार है जिनको अपना जीवन अन्धकार में दिखाई पड़ता है।

यह सारणी बताती है।

जिला	पलायन करने वाले परिवार	जनसन्ख्या अनुमानित
बान्दा	1964	9820
हमीरपुर	3249	16245
महोबा	7103	35515
चित्रकूट	1578	7890
योग	13894	69470

परिवार सहित पलायन के यह आन्कड़े सरकारी लेकिन अतर्रा स्थित एक स्वैच्छिक सामाजिक सन्गठन कृ ष्णार्पित सेवा सन्स्थान ने अपने कार्य के लिए बान्दा जिले के महुआ विकास खण्ड की कुछ ग्राम पन्चायतों में पलायन करने वालों का अध्ययन किया था। जिसके तुलनात्मक अध्ययन से निम्न तथ्य उजागर होता है कि सरकारी आन्कड़ों की तुलना में पलायन कहीं बहुत अधिक है।

पलायन विवरण

गांव का नाम	पलायन करने वाले परिवारों की सन्ख्या	पलायने करने वाले सदस्यों का विवरण
मनीपुर	186	292
माधौपुर	48	55
पिथौराबाद	40	40

जरर	68	68
रागौल	33	50
गोबिन्दपुर	32	53
योग	407	558

बुन्देलखण्ड पिछड़ा क्यों न हो– रोजी–रोटी की खोज एक सबसे बड़ी मजबूरी और एक झूठी शान कि ''लोग क्या कहेंगे'' है। यही कुछ ऐसी वजह हैं जिनसे यह इलाका पिछड़ा था, पिछड़ा है पिछला ही रह गया। स्त्री का दुर्भाग्य है की मां–बाप चाहते हैं कि बस किसी तरह शादी हो जाए और वह यहां से चली जाए शादी के बाद वह व्यक्ति जिसके साथ शादी हुई है क्या कर रहा है उसकी कोई चिंता नहीं। ऐसे में बेरोजगार पुरुष जब नौकरी के लिए घर के बाहर जाते हैं तो शहर, जिला छोड़ देते हैं तो पीछे रह गई पत्नी कहती है कि मैं ही अकेले यहां क्या करुगीं, आपके साथ ही चलते हैं। 2020–21 के नेशनल सैंपल सर्वे से पता चलता है कि बाहर जाने वाले पुरुषों के हिस्सेदारी 11.3प्रतिशत है और उत्तर प्रदेश से महाराष्ट्र नौकरी के लिए जाने वाले सबसे ज्यादा होते हैं।

हालांकि यह सब एक छलावा है, गौर करने की बात है कि केवल 40प्रतिशत प्रवासियों की कमाई में बढ़त होती है इसका अर्थ यह हुआ की कम कमाई के बावजूद देश के अपेक्षाकृत बाहर जाने वाले लोगों की सन्ख्या अच्छी खासी है। बहुत से युवाओं व लोगों को जो अपने काम को, अपने घर परिवार गांव में करने में शर्म आती है, उन्हें वही काम घर से दूर जाकर करने में कोई परेशानी नहीं होती। समय–समय की बात है– पंजाब से कनाडा जाकर रहने वाले लोगों की भी यही हालत है। दूर जाकर रहने में कमाई थोड़ी सी ज्यादा हो जाती है लेकिन अगर सापेक्ष रुप में देखा जाए तो बड़ी कमाई नहीं होती, कारण वहां का रहने का खर्च, भोजन का खर्च, कपड़े, अन्य खर्च व आने–जाने का खर्च जैसे यह सब चीज वहां उसी अनुपात में महंगी मिलती हैं अतः वहां रहने पर आमदनी जरूर बढ़ गई, लेकिन रहने का स्तर वही रहता है। जब वापस आते हैं तो पेट काट काट कर थोड़ी बहुत बची हुई कमाई को लाकर दिखाते हैं कि मैंने इतना बचाया। तुलनात्मक रूप से यह पूर्व में कमाई के सापेक्ष कम ही होती है। अमीर क्षेत्र में गरीब क्षेत्र से पलायन होना कोई चिंता की बात नहीं है लेकिन सोचने की बात है कि गरीब क्षेत्र गरीब क्यों है? जिसके लिए सरकार और कथित सक्षम प्रशासनिक अधिकारी इसके बारे में पूर्णतया अक्षम और आश्चर्यजनक रूप से शान्त है।

एसी रुम में बैठकर मेट्रोपॉलिटन /कॉस्मोपॉलिटन शहरों के कथित पीएचडी करने वाले और लोग सब सर्वे कर डालते हैं और उनको यह नहीं दिखे और नहीं दिखाई देता कि पलायन किए हुए मजदूर एक निश्चित जगह पाने के लिए उसे ठेकेदार के पास पहुंचना ही है। बाद में बाद बेगारी करने वाले लोग बन जाते हैं और शिकार हो जाते हैं। जाते समय क्योंकि कुछ भी नहीं होता अतः ठेकेदार से कुछ आर्थिक सहायता मिलती है और यही आर्थिक सहायता उन्हें बन्धुआ मजदूरों के तौर पर पूरी जिन्दगी उन्हीं के पास काम करने के लिए मजबूर कर देती है। ईंटें बनाने वालों को मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा है कि वह उनके 25–30000 रुपये दबा के रख लेते हैं ताकि वह भाग न जाए और इस तरीके से उसे 25–30 हजार रुपए वापस लेने के लिए पूरा परिवार वहीं पर जन्गल में ईंटें पाथता रहता है और उनके बालक बच्चे भी वही पैदा होते हैं, बड़े हो जाते हैं और निश्चित रूप से एक अनपढ़ प्रजाति तैयार हो जाती है। इसी तरह के काम में लीन माता–पिता अपने बच्चों को पढ़ने कहां भेजेंगे? बड़े शहरों में भी अगर बिल्डिंग बन रही है एक बिल्डिन्ग चार–पान्च पहीने या 1 साल में बन जाती है, फिर उसको वहां से पलायन करना होता है तो इस तरह क्या बच्चों की पढ़ाई होती है। कभी नहीं और वह एक नई बेरोजगार बेगार अब बन्धुआ मजदूर की क्रांतिकारी फसल तैयार होती रहती है। सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र का अध्ययन आज तक कभी हुआ ही नहीं और जो हुआ वह ऐसी आकाश में मेट्रोपॉलिटन कॉस्मोपॉलिटन शहरों में बैठे हुए शोधकर्ता, अधिकारी नाम कमाने के लिए और एक पीएचडी नाम के डिग्री का कागज हाथ में लेने के लिए तैयार रहते हैं।

महिलाएं भी अपने स्वतन्त्र जीवन की आस रखती है इसलिए परदेश जाने के लिए एक मजबूत विकल्प मानती है और अपने परिवार के साथ चली जाती है। पहले की तुलना में शोषण कम हुआ है लेकिन इस समाज में नौकरी को बराबरी पैदा करने का आसान माध्यम माना जाता है जबकि वास्तविकता ऐसी नहीं है। समाधान क्या है यह एक विचारणीय विषय है। छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों को बढ़ाया तो जाए लेकिन उनकी मार्केटिन्ग के लिए प्रत्येक डिपार्टमेन्ट एक उपदेश जरूर देता रहता है लेकिन उनके बनाए हुए उत्पाद को कहीं खपाने के लिए कोई कोशिश नहीं करता और कोशिश करता भी है तो उसके लाभ का कुछ प्रतिशत उसको सहूलियत प्रदान करने के लिए अर्पित करनी होती है। सरकारी तनख्वाह केवल उपदेश देने के लिए है।

आत्महत्याएं

किसान अपने तथा परिवार की बेहतरी के लिए निरन्तर और बेहतर प्रयास करता है। लेकिन इन कोशिशों में वह एक प्रयास जरूर करता है कि लोग यह न जान पाए कि वह गरीब हो गया है या उसके परिवार के सामने भूखों मरने या कर्ज देने वाले से बेइज्जत होने वाला हैं। यह मामला उसके परिवार तथा उसके परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा और उसकी आन बान शान से जुड़ा हुआ हैं और हो जाता है।

लेकिन सब कुछ गवां देने के बाद भी वह अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा नही बचा पाता, उसकी कथित आन बान शान मिट्टी में मिलने लगती है, तब फिर वह आत्महत्या करने को तैयार होता हैं और फान्सी पर झूल जाता हैं।

आत्महत्या के जिन आन्कड़ो का विश्लेषण यहां किया गया है, वे पुलिस विभाग में मौजूद है। आत्महत्याओं की यह सन्ख्याऐं पुलिस विभाग में इस लिए मौजूद है कि विश्लेषण में वही आत्महत्याएं शामिल की गयी है जिनका पोस्टमार्टम कराया जाता है। मृतक का लिन्ग, उसकी उम्र, उसका पता, आत्महत्या का कारण तथा आत्महत्या का माध्यम वहीं अन्कित किया गया है जो परिवार के लोगों के द्वारा पुलिस को सूचना देते समय और पोस्टमार्टम हाऊस में परिवार के लोगों द्वारा समाचार सन्कलन के लिए मौजूद पत्रकारों को बताया जाता है।

''जिलेवार आत्महत्याएं सारणियों को देखने से प्रतीत होता है कि बान्दा जिले में सर्वाधिक गरीबी और आत्महत्याएं है, जब कि ऐसा है नही। चून्कि पन्चायत अध्ययन सन्दर्भ केन्द्र का मुख्यालय बान्दा में स्थित है और बान्दा में रहकर यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। रिपोर्ट भी समाचार पत्रों में प्रकाशित है। इस लिए बान्दा के पत्रकार सकेन्द्रित व सन्वेदित होकर आत्महत्या के बाद पोस्टमार्टम के लिए आने वाली प्रत्येक लाश को प्रमुखता के साथ अपने समाचारों में स्थान दिया। यह कार्य हमीरपुर, महोबा तथा चित्रकूट जनपदों में शायद नही हो पाया।''
पन्चायत अध्ययन सन्दर्भ केन्द्र

आत्महत्या के सारे आन्कड़े चून्कि समाचार पत्रों से ही लिए गए हैं इसलिए बान्दा में अधिक, बाकी जिले में कम आत्महत्याएं दिखाई पड़ती है।

आत्माहत्याओं का मामला अत्यन्त सम्वेदनशील मामला है। अतः पक्के सबूतों के साथ काम करने के तहत ही समाचार पत्रों द्वारा मिली जानकारी का उपयोग किया गया। समाचार पत्रों में वही आत्महत्याएं प्रकाशित होती है जिनका पोस्टमार्टम होता है अतः समाचार पत्रों के साथ ही पुलिस के पास भी ये आन्कड़े मौजूद है।

आन्कड़ो के मुकाबलें आत्महत्याएं कई गुना

आन्कड़ो में जो आत्महत्याएं शामिल है वह मात्र वो है जिनका पोस्टमार्टम होता है जो आत्महत्याओं की वास्तविक सन्ख्या से बहुत ही कम है आत्महत्याओं के इन आन्कड़ो में वह आत्महत्याएं शामिल नही है जिन आत्महत्याओं के बाद पुलिस लाशों का पन्चनामा करके उन्हे परिजनों को अन्तिम सन्स्कार के लिए सौप देती है। इन आत्महत्याओं में वह सन्ख्याएं भी शामिल नही है जो आपसी समझ वाले गांव में आत्महत्या के बाद पुलिस को सूचना दियें बिना ही लाशों का अन्तिम सन्स्कार कर दिया जाता है। उनके साक्ष्य भी कहीं मौजूद नही है।

अगर किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं के वास्तविक आन्कड़े एकत्र किए जाएं तो उनकी सन्ख्या दसियों हजार भी पहुंच सकती है।

Age group wise Suicide Case Between 2003 to 24 Aug 2006

वर्ष	जिला	उम्र 0—20	उम्र 20—40	उम्र 40—100	उम्र पता नहीं	योग
2003	बान्दा	24	86	17	51	178
2003	चित्रकूट	3	4	1	3	11
2003	हमीरपुर	6	11	2	3	22
2003	महोबा	1	18	2	6	27

2004	बान्दा	31	132	19	18	200
2004	चित्रकूट	2	21	1	1	25
2004	हमीरपुर	17	39	7	2	65
2004	महोबा	7	23	5	3	38
2005	बान्दा	22	23	22	91	158
2005	चित्रकूट	3	5	6	3	17
2005	हमीरपुर	8	40	9	2	59
2005	महोबा	3	17	3	21	44
2006	बान्दा	17	58	16	16	14
2006	चित्रकूट	2	7	1	4	14
2006	हमीरपुर	12	23	4	6	45
2006	महोबा	5	16	3	6	30
	योग	163	523	118	236	1040

ऊपर की सारिणी से स्पष्ट होता है कि शून्य से बीस वर्ष के बच्चे और किशोर भी आत्महत्याएं कर रहें है। इनमें अधिकांश तो वह सन्ख्या सामिल है जिनमें पूरे परिवार ने जहर खा कर या फिर मां ने बच्चों सहित आग लगाकर या कुए में कूद कर आत्महत्याएं की है। इसमें बालिकाओं की सन्ख्या अधिक है।

जीवन की जिम्मेदारियां सम्भालते ही गरीबी का सामना, हताशा तथा परिवार की माली हालत खराब होने पर बटवारें के कारण 20 से 40 वर्ष के वयस्क सर्वाधिक आत्महत्याएं कर रहें है। बीमारी गरीबी के कारण इलाज न करा पाने अथवा परिवार की दयनीय आर्थिक हालात में भी बहुओं द्वारा बटवारे की जिद या फिर बैन्कों के कर्जे की वसूली से तन्ग आकर बुजुर्ग भी आत्महत्याएं कर रहे है।

2003 से 24 अगस्त 2006 तक आत्महत्या के कारण

वर्ष	जिला	दहेज	पारिवरिक तनाव	बीमारी	गरीबी	अज्ञात	योग
2003	बान्दा	4	81	10	23	60	178
2003	चित्रकूट	0	4	0	1	6	11
2003	हमीरपुर	1	9	0	0	12	22
2003	महोबा	1	6	5	5	10	27
2004	बान्दा	2	107	19	24	48	200
2004	चित्रकूट	0	8	2	2	13	25
2004	हमीरपुर	0	20	4	11	30	65
2004	महोबा	0	21	3	3	11	38
2005	बान्दा	1	74	18	19	46	158
2005	चित्रकूट	0	6	1	1	9	17
2005	हमीरपुर	0	26	2	8	23	59
2005	महोबा	0	12	3	10	19	44
2006	बान्दा	1	41	11	3	45	107
2006	चित्रकूट	0	8	1	3	5	14

2006	हमीरपुर	2	14	5	0	21	45
2006	महोबा	0	12	2	9	13	30
	योग	12	459	86	122	371	1040

इस सारिणी से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक तनाव??? से ग्रस्त होकर अधिकांश आत्महत्याएं हो रही है। ऐसे कारणों से आत्महत्या करने वालों के परिवारों का फौरी अध्ययन करने पर पता लगता है कि परिवारों में तनाव गरीबी के कारण ही पैदा होता है। लेकिन परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए लोग गरीबी न बता कर उसके परिणाम को ही पुलिस तथा पोस्ट मार्टम के समय पत्रकारों को बताते है।

आत्महत्या करने के अज्ञात कारणों की सन्ख्या भी कम नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि गरीबी से ऊबकर की गयी आत्महत्या को लोग अज्ञात बताते है। यह भी पाया गया है कि अवैध सम्बन्धों, जुआ व शराब के लती लोगों की आत्महत्या करने वालों के परिवारिक जनो ने कुछ केसेज में अज्ञात कारण बताया।

बीमारी और दहेज के कारणों से में बहुत बड़ा योगदान यहा की गरीबी है। गरीबी के कारण की गयी आत्महत्याओं में केवल बैन्क के साहूकारों के कर्जे या फिर भुखमरी के शिकार लोगों के द्वारा यह आत्महत्याएं की गयी हैं?

बुन्देलखण्ड में अप्रैल से जून की तिमाही में ही यहां की प्रमुख रबी की फसल खेत से कटकर खलिहान में, खलिहान से मड़ कर घर में आती है। फसल खेत से घर तक लाने में किसान पूरे साल की योजना बनाता है। वह इस साल बिटिया की शादी कर लेगा, कुछ कर्जा अदा कर देगा, बेटे को पढ़ने के लिए बाहर भेजेगा, बाप का इलाज किसी बड़े डाक्टर से करा देगा लेकिन फसल की हालत देख उसका कलेजा सूख जाता है। इसी बीच उसकी जीवन सन्गनी सहयोग के लहजे में कहती है कि इस साल भी जेवर रेहन से नहीं छूट पायेंगे। किसान या मजदूर के पास आत्महत्या के अलावा और कौन रास्ता है?

इसके बाद सबसे अधिक आत्महत्याएं अक्टूबर से दिसम्बर के बीच होती है। इस समय तक किसान और मजदूर के घर खाने की दिक्कत होती है। परिवार को जिन्दा रखने के लिए अनाज अब क्या बेन्च कर लाए? और यहीं अधिकतम आत्महत्याएं करता है।

आत्महत्याएं तो साल भर होती हैं। इसका एक प्रमुख कारण है कि बैन्क कर्जे या फिर माल गुजारी के लिए तहसीलों की गाड़ियों की आवाज सुनकर किसान कोने कतरे छिप जाता है वर्ना उसे अमीन का चपरासी उसे बान्धकर 14 दिन के लिए हवालात में डाल देगा। काश यही कानून लाखों का कर्ज लेकर डकारने वालों का भी होता।

आखिर वह कब तक भागे। आत्महत्या के अलावा उसके पास क्या रास्ता है। शुक्र है कि अभी तक किसान न तो सन्गठित हुआ और न ही तहसील के कर्मचारियों की सामूहिक हत्याएं की।

किसानों द्वारा की गयी आत्महत्याओं के पीछे मूल और प्रमुख कारण गरीबी ही है। परिवार के लोगों द्वारा पुलिस अथवा पत्रकारों या अन्वेषण्वको को आत्महत्या के जो कारण बताए जाते हैं वह या तो गरीबी है या फिर गरीबी के परिणाम।

आत्महत्या करने वालों की उम्र के हिसाब से अगर देखें, तब भी यही सन्केत मिलते हैं कि जिस उम्र में व्यक्ति के ऊपर परिवार की जिम्मेदारी का भार पड़ता है तभी उसे गरीबी का अभास होता है और कहीं रास्ता न सूझता देख वह आत्महत्या कर लेतें हैं।

मौसम के अनुसार यदि आत्महत्याओं का विश्लेषण यदि किया जाए तो जिस समय में खेत से फसल किसान के घर में आती है, उसी समय यह सन्ख्या अधिक बढ़ जाती है। रबी तथा खरीफ की फसलों तथा इसके अतिरिक्त भी शादी ब्याह के मुहूर्त और स्कूलों में दाखिला के समय, जब परिवार का मुखिया अपनी उन जिम्मेदारियों का निर्वाह नहीं कर पाता है, तब वह आत्महत्या करता है। लेकिन कर्ज की वसूली तो साल भर चलती है, जिसके चलते लोग आत्महत्या करते हैं।

निष्कर्ष

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बुन्देलखण्ड में निरन्तर घाटे में जा रही खेती के कारण किसान अब बदहाली से ऊबकर आत्महत्याएं करने को ही एक मात्र विकल्प के रूप में देख रहे हैं। निरन्तर कुपोषण के कारण लोग बीमार पड़ते हैं। गरीबी और बीमारी की पीड़ा एक साथ न झेल पाने के कारण भी लोग आत्महत्या कर लेते हैं।

सूखा

सूखा क्या पड़ा, जनपद बान्दा में पियक्कड़ों की भरमार हो गयी। आमदनी भले ही कम हो लेकिन दारू पीने वालों के गले तर बतर हैं। शराब की बिक्री के आन्कड़ों पर नजर डालें तो हालात यही बयान करते हैं

2005 06 में 12 लाख 48 हजार 472 लीटर देशी शराब पी गयी थी। साल दर साल इसकी खपत में बढ़ोत्तरी हुयी है। वर्ष 2009 में 15 लाख 67 हजार 112 लीटर शराब पी गयी है। 3 लाख 19 हजार 640 लीटर शराब ज्यादा बिकी है। 2005 06 में इसकी बिक्री 2 लाख 19 हजार 464 बोतल हुयी थी। 2006–7 वित्तीय वर्ष में 5 लाख 11 हजार 30 बोतल गटकी गयी हैं। शहरी क्षेत्र में 2005 06 में 1 लाख 84 हजार 670 बियर की बोतलें बिकी थीं।

औद्योगिक सन्स्थान

बान्दा में ऐसा कोई औद्योगिक सन्स्थान या उद्योग नहीं है जिसका यहां पर उल्लेख किया जा सके। विद्रोह से पहले, जो कपास का व्यापार फैल रहा था, वह भी पूर्णतया समाप्त हो गया। कॉटन प्रेस इन्जन /इंजिन जो रेलवे स्टेशन के पास था, समय और मौसम की मार से नष्ट होता हुआ खत्म हो गया (और वर्तमान में 2021ई. में बस स्टॉप बना हुआ है) और असफल उद्योग की यादें रह गई। शहर के मानुषों में उद्योग व्यापार की नई इच्छा के प्रति ऊर्जा की भयन्कर कमी है व दुखद उर्जा है। अधिकांश आबादी कृषि कार्य में भगवान के भरोसे कार्यरत रहना चाहते हैं। कुछ लोग, जिन्हें व्यापारी कहा जा सकता है, जनता को भोजन पानी के प्रबन्ध में लगे हुए है। कुछ समाज के धनवान लोगों के लिए, महंगी चीजों का, अन्य जगह से प्रबन्धन में जुटे रहते हैं।

औद्योगिक विकास

बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे पर औद्योगिक शहरों का निर्माण होगा जिनमें बुन्देलखण्ड के चित्रकूट, बान्दा, हमीरपुर, महोबा, जालौन और औरैया है। बान्दा में पहले से ही औद्योगिक क्षेत्र के केन नदी के किनारे पर बना हुआ है, जो 30 साल के पश्चात भी एक या दो फैक्ट्री को छोड़कर वीरान है। यही डेवलप नहीं हुआ क्यों? आज तक कभी इस पर ध्यान दिया ही नहीं गया। बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे पर और औद्योगिक शहर बनाया जाएगा, केवल खुश करने के लिए एक बार और अनाउन्समेंट हो गया कि औद्योगिक शहर बनेगा जो की एक आईवॉश है।

आरती यादव प्रभारी एक्स ईएन बान्दा विकास प्राधिकरण के अनुसार महा योजना 2031 का फाइनल प्रस्ताव, 2025 में, अभी शासन को भेजा जाना है। वह कब जाएगा, कब पास होगा, कब उस पर काम शुरू होगा और उसकी क्वालिटी कैसी होगी? सोचने योग्य है। और कब उद्योग विकसित होंगे? बान्दा में एक उद्योग क्षेत्र को विकसित तो नहीं कर पाये जो आज के 25–30 साल पहले शुरू किया गया था, एक नया और शुरू हो रहा है।

फरवरी 2023 के एक समाचार के अनुसार यूपी में निवेश की एक योजना चली है। समाचार के हेडिन्ग – सबसे ज्यादा निवेश पश्चिमी यूपी के लिए।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए केवल 13 परसेंट जब कि पश्चिमी क्षेत्र के लिए 1,68,11,108.4 रु के निवेश का प्रस्ताव हैं और यह सोचा जाए कि बुन्देलखण्ड और उसमें भी बान्दा का विकास होगा, एक कार्यालय में ऊघतें हुए दिन में देखा गया सपना ही है

यातायात–सड़क आवागमन के साधन

जहां तक यातायात का प्रश्न है अछरौड़, सिरौली, और इसी तरह के लगभग अन्य 50 गांव ऐसे हैं जिनका बान्दा से कोई सीधा सम्पर्क नहीं है। उनको बान्दा आने के लिए पहले 20 से 30 किलोमीटर पुराने पुल की तरफ केन रेलवे पुल पर आना पड़ता है फिर बान्दा जाना पड़ता है। जब बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस बनी थी उसी समय पर सभी से अनुरोध किया गया कि केवल पुल पर सभी तरह के साधनों के लिए जैसे पैदल पथ, मोटरसाइकिल, और ट्रैक्टर के

लिए एक लेन बना दी जाए, जो पुल पर इधर से चढ़े और दूसरी तरफ से उतर जाए। चाहे तो उसे पर 5 या ₹10 का कर वसूला जा सकता है– टोल टैक्स की तरह लेकिन एक्सप्रेसवे के इंजीनियरों ने इस कान से सुना और उसे दूसरे कान से निकाल दिया और इस इलाके को पिछड़ा बना रहने के लिए ही छोड़ दिया। आज भी बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस वे से पैदल केन पार नहीं किया जा सकता, साइकिल, मोटरसाइकिल, ई रिक्शा को छोड़ दें, उनकी तो विसात ही क्या है?

2023 व 24 में बान्दा से दिल्ली जाने का अवसर प्राप्त हुआ। कुद्रैल, जहां चित्रकूट बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस खत्म होता है, वहां से करीब 25 किलोमीटर पहले से सड़क की ऐसी हालत थी कि मरते मरते बचे। काली सड़क पर एकदम दबी हुई सड़क और काफी ऊंची उठा हुआ सड़क और इसी तरह से न जाने कितने टूट फूट एक्सप्रेसवे में थे। प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के द्वारा उद्घाटित बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे का हालत यह है कि 2025 में भी कुद्रल से 25 किलोमीटर पहले तक का रास्ता एक गई–बीती सड़क से भी बेकार था यह बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे की हालत। दिन में चलने के कारण बच गया अन्यथा रात में तो गाड़ी उछल के कहां जाती, भगवान ही जाने। इस पूरे 196 किलोमीटर में तीन पेट्रोल पंप में केवल एक ही चलता हुआ दिखाई दिया। भोजन, पानी या पीने के पानी को तो भूल जाओ।

2025 में सांसद आरके सिन्ह पटेल के अनुसार पाठा क्षेत्र में देवांगन एयरपोर्ट बनाने का प्रस्ताव किया गया है और सच यह है कि बान्दा का इससे दूर–दूर तक सम्पर्क नहीं है, इसलिए बान्दा इस आकाशीय परिवहन से दूर है और दूर ही रहेगा

<u>परिवहन सड़क परिवहन व रेल</u>

बान्दा से यद्यपि चारों दिशाओं में आवाजाही के लिए रास्ते हैं लेकिन मुख्य रास्ते झान्सी, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद और इसी तरह से मिर्जापुर आदि के लिए है। 2023, 22 जुलाई शनिवार अमर उजाला के रिपोर्ट के अनुसार 36 किलोमीटर की सड़क पूरी तरह से ध्वस्त है, खत्म हो चुकी है, इनमें पानी भरा रहता है जिससे आने जाने वाली किसी भी गाड़ी को पता नहीं चलता कि वह कितने गहरे हैं इसलिए चिल्ला होते हुए कानपुर तक रोडवेज बस में ले जाने से रोडवेज ड्राइवर में अपने को अक्षम घोषित कर दिया है। ऐसे में 40 किलोमीटर अतिरिक्त चक्कर लगाकर तिन्दवारी फतेहपुर और हमीरपुर की तरफ से भेजी जा रही है। सड़क पर सामान्य जनता को आना जाना है लेकिन सड़क किसके अधिकार क्षेत्र में है, केवल इसी विषय पर सभी आपस में लड़ रहे हैं और इतनी एडवांस तकनीक के होते हुए भी वह यह निश्चित नहीं कर पा रहे की सड़क किसके अधिकार क्षेत्र में आ रहा है जो कि जानबूझकर इलाके को पिछड़ा बनाए रखने में पूरा सहयोग कर रहे हैं। बान्दा से गोरखपुर दिल्ली लखनऊ सहित अन्य प्रमुख मार्गों पर 40 बसें से चलती है और 4000 से अधिक यात्रियों का आना–जाना होता है, अब क्योंकि 40 किलोमीटर अधिक चलना है तो निश्चित रूप से उसी हिसाब से अधिक किराया भी देना पड़ेगा ही। मौरंग से लदे हुए ओवरलोड ट्रकों के, जो सभी का भला करते हैं, चलने के कारण चाहे सड़क कैसी भी बना ली जाए टूट ही जाती है और इनका पुनः गड्ढा मुक्त बनाने के नाम पर इसमें मौरंग भर दी जाती है जो कुछ समय बाद उछल–उछलकर पुनः गड्ढा बन जाता है। मौरंग से भरे हुए ट्रैकों के कारण बहुत लोगों के अधिकारियों के भ्रष्ट और भ्रष्टाचार इस क्षेत्र में एक सामान्य कारण है।

अगर प्रयागराज झान्सी के लिए कुछ और ट्रेन चल जाए जो कुछ इस तरह से सन्चालित हो कि बान्दा से प्रयागराज या झान्सी से प्रयागराज सुबह चलें और शाम को वापस बान्दा, झान्सी पहुंच जाए तो वह लोग जो इलाहाबाद में हाई कोर्ट, यूपी ऑफिस, सन्गम जाने वाले, एजुकेशन बोर्ड ऑफिस, एजी ऑफिस को जाने वाले लोग आसानी से अपने कार्य करने के लिए जा सकें और पूरा होने के पश्चात फिर वापस आ सके। इसके सन्दर्भ में सभी विभागों की तरह यहां भी चिट्ठी पत्र आदि खानापूर्ति है तो भेजे जाते हैं लेकिन बान्दा पिछड़ा था इस कार्यवाही में और से पिछड़ा रहेगा।

<u>सड़क यातयात</u>

हाईवे बाईपास के किनारे विकसित होंगे उद्योग – यह कहना है कानपुर एडिशन के बुधवार 2024 के द्वारा। अछरौड और आस पास के गांवों के पास गुजरने वाले बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस का, उसके दोनों तरफ बसने वाले गांव को एक धैले का भी फायदा नहीं हुआ। अगर बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस में केन नदी के पुल पर एक बाई लेन बना दिया जाता तो कोई नुकसान न होता। अछरौड और आस पास के गांवों के लोगों को 40 किलोमीटर का चक्कर लगाकर बान्दा जाना पड़ता है और करोड़ों रुपए का पेट्रोल खर्च हाता है। शायद वह पेट्रोल और वर्किंग हॅवर्स /श्रम के घंटे बच गए होते। इसमें करना कुछ भी नहीं था एक तीन मीटर चौड़ी एक सड़क पुल के साइड में बना दी जाती और इस तरह से रखने से बुन्देलखण्ड एक्सप्रेसवे में कोई भी आदमी, साइकिल, मोटरसाइकिल और पैदल जाने वाले

इस लेन का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन यह किसी को भी ध्यान नहीं आता। बुन्देलखण्ड के यह कुछ गांव पिछड़े थे पिछड़े हैं और पिछड़े ही रह गए।

रेल यातयात

बान्दा रेलवे स्टेशन पर लगे हुए नाम के अनुसार बान्दा की समुद्र तल से ऊंचाई 123 मीटर है जिसको अंग्रेजी में एमएसएल/मीन सी लेवल कहा जाता है

भारत में रेलवे लाइन को बिछे हुए वर्तमान में लगभग 173 साल हो गए हैं (16 अप्रैल 1853 मे पहली रेल यात्रा)। अब बान्दा की 23 अगस्त 2023 की सूचना के अनुसार बान्दा से गुजरने वाली कुछ ट्रेनों की बोगियां और स्पीड बढ़ाने जा रहा है। यहां की पटरीयों को बदला जा रहा है जो की भारत की विकसित ट्रेनों के सापेक्ष बहुत पुरानी तकनीक और सुरक्षा मानक से लगे हुए हैं। कम से कम आज 1 अगस्त 2025 तक दोहरीकरण नहीं हुआ है पटरीयों की हालत इस तरह की नहीं है कि इस पर उच्च गति की ट्रेनों को गुजारा जा सके। पूरे भारत में तरह–तरह की अत्यन्त द्रुतगति ट्रेन है, चल रही है लेकिन बान्दा से गुजरने वाली केवल सम्पर्क क्रांति एक्सप्रेस और गरीब रथ एक्सप्रेस ही है जिनको मोस्ट एडवांस्ड कहा जा सकता है और दोनों ही ट्रेनएक्सप्रेस लेवल की है, इसके बावजूद उनकी स्पीड एक पैसेंजर गाड़ी से ज्यादा कि नहीं है। बान्दा से लखनऊ की दूरी 210 किलोमीटर है लेकिन समय 5. 30 घंटे से ज्यादा लगता है जो की औसत गति 30 किलोमीटर प्रति घंटा लगभग ही रह जाती है और लेट हो गए तो भगवान मालिक है। इसका केवल एक ही कारण है की बान्दा पिछड़ा है, पिछड़ा था और पिछड़ा ही रहेगा।

बान्दा सान्सद पत्र में बताया गया है कि वर्ष 1958 अर्थात 2025 में लगभग 67 साल पहले फतेहपुर बान्दा (अतर्रा बबेरू रेल मार्ग) निर्माण को लेकर सर्वे किया जा चुका था। यहां की जनता को खुश करने के लिए 1980 में दोबारा सर्वे कराया गया। परिणाम 70 किलोमीटर के प्रस्तावित रेल मार्ग का भविष्य अधर में पड़ गया और सांसद पत्र के जवाब पर एक बहुत विस्तृत उत्तर दिया गया और कहा गया की विस्तृत जांच कराए जाने का निर्देश दिया जाता है। 67 साल से और आज तक किसी को इस पिछड़े हुए इलाके के कोई सुध नहीं आई है।

5 जुलाई 2024 को उत्तर मध्य रेलवे के अनुसार एक बहुत छोटे से पैच में हाई स्पीड ट्रायल टेस्ट किया जा रहा था और उसमें आम नागरिकों वाहन चालकों किसने और चरवाहों से अपील की गई थी कि इस खंड में लाइन के आसपास न स्वयम् आए ना जानवरों को आने दे, जो जाहिर करता है कि चाहे एक्सप्रेस ट्रेन है ही क्यों ना हो बुन्देलखण्ड एरिया में, बान्दा क्षेत्र में या उसके आसपास के स्टेशनों का लाइनों की इतनी खराब हालत है कि स्पीड ट्रायल टेस्ट के लिए अधिसूचना जारी करनी पड़ रही है जाहिर होता है कि रेलवे इस मसले में इस इलाके में बहुत पिछड़ा हुआ था और है, आगे भविष्य शायद अन्धकारमय है।

कितने दुख की बात है कि वर्तमान में 1958 या उससे पहले से चल रही ट्रेन आज भी बान्दा से कानपुर होते हुए दिल्ली के लिए कोई ट्रेन नहीं है और भविष्य में भी अगर कोई ट्रेन आएगी तो उसका समय ऐसा होगा कि व्यापारी, छात्रों और अन्य लोगों के लिए इसका कोई उपयोग नहीं होगा। हां, अवश्य ही कहने को दो ट्रेन जरूर हैं जो कानपुर बान्दा झान्सी और दिल्ली के लिए जाती हैं और आती हैं।

25 दिसम्बर 1858 को बताया जाता है कि झान्सी इलाहाबाद पैसेंजर पहली ट्रेन थी जो इस इलाके से गुजरी।

6 अगस्त 1923 को प्रकाशित एक विज्ञापन में बताया गया कि उत्तर प्रदेश के पुनः विकसित होने वाले रेलवे स्टेशन कौन–कौन से हैं, मतलब विकसित रेलवे स्टेशनों को और ज्यादा विकसित करने होने वाले रेलवे स्टेशनों की सूची दी गई, लेकिन इसमें बान्दा कहीं नहीं था अर्थात यह अति पिछड़ा रेलवे स्टेशन है। विकसित जैसी किसी भी श्रेणी में भी नहीं आता जिससे पुनः विकसित किया जा सके। ऐसा नहीं है कि यहां पर यात्रियों की सन्ख्या कम हो। अगर यहां औद्योगिक विकास होता तो फैक्ट्रियां भी होती, पर्यटन को बढ़ावा दिया गया होता तो यात्रियों की सन्ख्या निश्चित रूप से बढ़ गई होती, बाहर से लोग यहां काम करने आते और यहां से लोग बाहर काम करने जाते हैं। जब पिछड़ा इलाका है तो कोई क्यों आएगा? क्यों यात्रियों की सन्ख्या बढ़ेगी? अतः यह पिछड़ा ही रहा, था और शायद पिछड़ा ही रहेगा

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नवम्बर 2023 में अपने क्षेत्र में कुछ ट्रेनों का उद्घाटन किया और यह उद्घाटन 90 वर्ष की अपेक्षा और उम्मीद के बाद सम्भव हो पाया। कारण वहां के राष्ट्रपति थे और बान्दा जैसा इलाका जहां से

कोई सांसद इतना प्रभावशाली नहीं रहा कि यहां का विकास कर पाता। रेल यातायात के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि भारत के नक्शे में रेल के सम्बन्ध में बान्दा आज भी पिछड़ा हुआ है अर्थात 16 अप्रैल 1853 में लगभग 173 साल पहले जब पहली ट्रेन बोरीबन्दर से थाने तक चली थी तब से और आज तक बान्दा पिछड़ा है पिछड़ा था और शायद पिछड़ा ही रहेगा।

राहुल जैसे लोग जब अपने यात्रा करते हैं तो वह बुन्देलखण्ड को कभी भी प्राथमिकता नहीं देते क्योंकि यहां उनका कोई वोट बैंक नहीं है और जो श्रमिक वोट बैंक में होते हैं, वह सब पलायन करके जा चुके होते हैं। अतः नेताओं के सत्ता में आने पर इस तरह के इलाकों का कोई विकास नहीं होता, इसीलिए बुन्देलखण्ड पिछड़ा है पिछड़ा था पिछड़ा रहेगा। 12 फरवरी 2024 को राहुल की कथित न्याय यात्रा पश्चिमी यूपी बुन्देलखण्ड को छोड़कर बनी थी। विशेष कारणवश व विवशता के कारण बुन्देलखण्ड से गुजरने का प्लान पुन :प्लान के अन्तर्गत बना था और नए रूट की तैयारी में कांग्रेस जुड़ गई थी। इसी इलाके से विजित वी पी सिन्ह पूर्व प्रधानमन्त्री भी विकास करने में अक्षम रहे।

अन्ना प्रथा

बुन्देलखण्ड में अन्ना अर्थात अन्ना मवेशी /आवारा मवेशी अन्ना प्रथा उस समय शुरू हुई थी जब गेन्हू आदि कटने के बाद, भूसे की कमी के कारण उन्हें वर्षा खत्म होने तक के लिए छोड़ देते थे क्योकि तब एक ही फसल ही ली जाती थी। अब इनकी आबादी बहुत बढ़ गई है।

जग जाहिर है कि आवारा 2 लाख के लगभग मवेशी जिनमें नीलगाय भी शामिल है, वन विभाग के आशीर्वाद से जन्गलों में पेड़ों की कमी के कारण, रात में कभी कभी दिन में भी, जन्गल को छोड़कर हरे–भरे खेतों की तरफ दौड़ लगाते हैं। रात दिन भर इधर से उधर और खेत में घुसने की जगह मिलने पर खेतों की चढ़ाई करने के बाद, गर्मी से निजात पाने के लिए कई सड़कों पर आकर बैठ जाते हैं। पशुओं के अचानक सड़क पर आने के कारण जो दुर्घटनाएं होती हैं उसके लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। गो वंश सन्रक्षण की जिम्मेवारी प्रधानों की और ऊपर तक के अधिकारियों की है। गो वंश सन्रक्षण के लिए पैसा भी आता है लेकिन गाए तो सड़क पर हैं तो पैसा कहां गया और इन्ही अन्ना प्रथा के कारण बान्दा पिछड़ा है, था और रहेगा। इस तरह गौहत्या किसी को नही लगती????

शिक्षा

वर्ष 2007 में बुन्देलखण्ड के 7 जिलों में केंद्रीय विद्यालय खोले जाने की घोषणा हुई थी और 2 साल के बाद अर्थात 2027 में 20 साल होने को आए बान्दा में केंद्रीय विद्यालय की शुरुआत नहीं हो सकती है। कारण एमपी, एमएलए, एमएलसी, डीएम– सभी के दिमाग में एक ही सूत्र समा गया है कि बान्दा पिछड़ा है तो पिछड़ा ही रहेगा अतः आज तक केंद्रीय विद्यालय की ना तो उसके लिए कोई बिल्डिंग है ना उसके लिए कोई कोशिश की गई है। डीआईओएस और अन्य लोग जो अपने को पढ़ा लिखा मानते हैं उनका काम है ऑफिस में बैठकर कागज लिखना और एक जगह से दूसरी जगह भेज देना और काम की इतिश्री। बाहर से भी लोग जमीन देखने आते हैं, वह क्या करेंगे। 20 साल के बाद भी बान्दा से सम्बन्धित सक्षम अधिकारी जो स्वयम्–भू पढ़े–लिखे कहलाते हैं, के दिशा निर्देशन में केन्द्रीय विद्यालय ना खोलना शायद एक एजेंडा हो और बान्दा अनपढ़ था, है और अनपढ़ ही रहेगा।

झान्सी, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद से 200 किलोमीटर दूर बसे बान्दा में कोई ऐसा विद्यालय या तकनीकी विद्यालय भी नहीं है जिसका कोई स्तर हो और एक दो जो भी उपलब्ध हैं उनका भी स्तर भी निम्न स्तर से भी नीचे है और यहां के पढ़े और निकले हुए छात्रों को बाहर कहीं भी रोजगार नहीं मिलता है और वह इतने सक्षम भी नहीं हो पाए कि वह खुद भी अपना कोई रोजगार कर सके।

सफाई अभियान

सफाई अभियान के दौरान गन्दगी को एकत्र करने वाली गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया और 2023, 1 सितम्बर को बान्दा आयुक्त आरपी सिन्ह शहर के कुछ लोगों को 15–10 लीटर की प्लास्टिक की बाल्टिया दी गई ताकि वह इसमें कूड़ा इकट्ठा कर सके लेकिन वह यह भूल गए कि गांव के आसपास शहर बान्दा के निकट बहुत सारे गांव भी हैं जहां के लोग गन्दगी के कारण बीमार हो रहे है। गांव के लोग मरे अपंग हो जाएं तो हो जाएं, उन्हें इन सब चीजों से कोई और मतलब नहीं है। डेंगू मलेरिया चिकनगुनिया आदि वेक्टर जनित बीमारियां केवल शहर में होती हैं ऐसा नहीं है तो जितना ध्यान शहर की तरफ रखा जाए उतना ही ध्यान अगर गांव में रखा जाए जहां भारत की अधिसन्ख्य जनसन्ख्या रहती है, तो शायद बीमारियां कम हो लेकिन बान्दा तो बान्दा, बान्दा के गांव भी पिछड़े हैं, थे और रहेंगे। लोग मरे तो मरे हमारा क्या ?

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

उद्योग

कताई मिल, 20 अप्रैल 1981, का यूपी स्टेट यार्न कम्पनी लिमिटेड की कताई मिल की नींव रखी गई। 1983 तक मिल में 1300 मजदूरों को रोजगार मिला और लगभग 45 लाख रुपए का 10000 किलो धागा रोजाना बनकर निकलता था। 15 साल चलने के पश्चात 1992 में मिल को बीमार घोषित कर दिया गया। आश्चर्य की बात थी कि इसको चलाने वाले भारत के सर्वाधिक सक्षम आईएएस ऑफिसर थे और उनके सक्षमता के कारण 1992 में मिल को बीमार घोषित किया गया, धीरे–धीरे मिल का उत्पादन घटा और 3 दिसम्बर 1998 को अर्थात 15 साल के बाद इसे बन्द घोषित कर दिया गया। तब से और अभी तक कोई भी औद्योगिक इकाई नहीं लगाई गई और मानव श्रम बान्दा से हटकर सूरत और अन्य स्थानों पर जाने लग गया और पूरा बान्दा जो बुन्देलखण्ड में सबसे पिछड़ा जिला था, रहा और रह गया।

वैवाहिक स्थिति

बुन्देलखण्ड इतना पिछड़ा हुआ इलाका है कि कोई व्यक्ति अपनी लड़कियों की शादी किसी इलाके में करना भी नहीं चाहता। बुन्देलखण्ड में 2011 के जनगणना के मुताबिक लिन्गानुपात निम्न है

जिला	लिन्गानुपात	जनसन्ख्या
बान्दा	863	17,99,210
हमीरपुर	861	11,04,285
महोबा	878	8,75,958
चित्रकूट	879	9,91,730
जालौन	865	16,89,974
झान्सी	890	1,99,603
ललितपुर	906	12,21,592

देश में अभी तक हरियाणा ही ऐसा राज्य था जहां लड़कियों का औसत काफी कम था और इस तरह के राज्यों में बहू को खरीदने के मामले अक्सर चर्चा में आते हैं और यही हालत बुन्देलखण्ड में ही मिलने लगे हैं। बान्दा हमीरपुर जालौन का औसत, औसत अनुपात से भी काम है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि बान्दा में अपना स्वयम् का कोई उद्योग नहीं है और ना ही कोई उद्योग या फैक्ट्री। एक कताई मिल हुआ करती थी जो प्रशासनिक अधिकारियों की दूरगामी क्षमता व असीमित क्षमता के कारण बन्द हो गई। किसने की दुर्दशा, अशिक्षित और पिछड़ेपन के कारण खराब है।

राजनीति– बुन्देलखण्ड को कभी भी प्राथमिकता नहीं

कथित शीर्ष नेता व लोग जब अपनी यात्रा करते हैं तो वह बुन्देलखण्ड को कभी भी प्राथमिकता नहीं देते क्योंकि यहां उनका कोई वोट बैन्क नहीं है और जो श्रमिक वोट बैन्क में होते हैं, वह सब पलायन करके जा चुके होते हैं, अतः नेताओं के सत्ता में आने पर इस तरह के इलाकों का कोई विकास नहीं होता। इसीलिए बुन्देलखण्ड पिछड़ा है पिछड़ा था पिछला रहेगा। 12 फरवरी 2024 को राहुल जी की कथित न्याय यात्रा पश्चिमी यूपी को छोड़कर कारण विवशता के कारण बुन्देलखण्ड से गुजरने का प्लान बना था और नए रूट की तैयारी में कांग्रेस जुट गई थी।

वन विभाग

बान्दा और पधारोपण वन विभाग की माने तो बान्दा की धरती सब्ज बहार है अर्थात हरी भरी है उनके आन्कड़ों के अनुसार जिले में 3 साल में 19 अक्टूबर 2023 के रिपोर्ट के अनुसार जो अखबार में पब्लिश्ड हुए, पिछले 3 सालों में 48,68,746 पौधे लगाए गए यानी जिले का क्षेत्रफल 4408 वर्ग किलोमीटर है या यह कहें कि प्रत्येक वर्ग किलोमीटर में 1,104 पौधे या यह कहे की प्रति 10 वर्ग मीटर में एक पौधा तो निश्चित रूप से है ही। इन 48,68,746

पौधों को लगाने में 6,64,17,000 रूपयों का खर्च हुआ। 2021 में 10,68,100 खर्च रु1,71,65,000/–, 2022 वर्ष में 14,00,300 पौधे और खर्च रु2,36 40,000/–, 2023 वर्ष में 2,40,346 पौधे और रु2,56,12,000/– पौधे पर खर्च हुआ।

वर्ष	पौधे	खर्च
2021	10,68,100	1,71,65,000
2022	14,00,300	2,36,40,000
2023	2,40,346	2,56,12,000
खर्च	48,68,746	6,64,17,000

इतना सब होने के बाद भी वन विभाग स्वयम् ही कहता है कि जनपद में वन क्षेत्र केवल ढाई फ़ीसदी है जबकि मानक 33 फ़ीसदी का ₹13.64 पैसे रुपए में एक पौधा लगाया गया लेकिन पौधारोपण का जगह बताने में वन विभाग असफल रहा यह पूरी रिपोर्ट एक बाजीगरी से कम नहीं है और इसे 19 अक्टूबर 2023 में पब्लिश अखबार में प्रकाशित रिपोर्ट से लिया गया है।

पर्यटन

यद्यपि औद्योगिक प्रचार प्रसार में बुन्देलखण्ड विशेषत, बान्दा बहुत ज्यादा पिछड़ा हुआ है लेकिन कालिन्जर, मडफा दुर्ग, महोबा के सागर, आल्हा ऊदल, कालिन्जर, खजुराहो, चित्रकूट जैसे अनेक पर्यटक स्थल व जन्गल हैं जिन्हें विकसित किया जा सकता है। पर्यटन को एक उद्योग के तौर पर विकसित किया जा सकता है। लेकिन यह इलाका पिछड़ा है तो पिछड़ा ही है।

चित्रकूट मन्डल के चित्रकूट में 13 14 फरवरी 2024 को हॉट एयर बैलून, योग, हेरिटेज वॉक, द थर्ड फ्लाइट, स्थानीय लोकगीत, सन्गीत कार्यक्रम, सन्स्कृत सन्ध्या आदि सन्चालित की गई। पर्यटन के हिसाब से बान्दा जिला भी कम नहीं है, लेकिन इस तरह के कार्यक्रम कभी भी बान्दा में शायद ही हुए हैं। तो यही कहा जा सकता है कि बान्दा से सम्बन्धित अधिकारी इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते शायद एक पिछड़ा जिला जो ठहरा।

20 जनवरी 2025 को हिंदुस्तान अखबार में प्रकाशित समाचार के अनुसार चित्रकूट महोबा और हमीरपुर तीस अरब की लागत से पर्यटन हब बनेंगे। चित्रकूट के 51 कार्यों के लिए 21 अरब रुपए, गोरखनाथ तपस्या जनपद महोबा में 17 कार्यों पर ₹5अरब, बान्दा में 17 कार्यों पर तीन अरब रुपए और हमीरपुर में 8 कार्यों पर एक अरब रुपए खर्च किए जाएंगे

राजापुर के पहाड़ी ग्राम में तुलसी स्मारक और उपवन, राजापुर में राम तुलसीदास की 12.50 फीट ऊंची प्रतिमा, पर्यटन सन्ग्रहालय और इसी तरह से बरगढ़ स्थित शिव मन्दिर, मड़फा किला, ग्राम बगरेही के निकट गणेश बाग स्थित श्री राम वाटिका, नांदी हनुमान मन्दिर, रामनगर झील गुन्ता बान्ध आदि कुछ ऐसे कार्य जो मुख्य हैं। बान्दा में कौन से कार्य होंगे इसका कोई विवरण नहीं मिल पाया। बान्दा स्थित म्युजियम को कोई ढूंढ कर दिखायें?

बान्दा में पर्यटन की असीम सम्भावनाएं हैं कालिन्जर किला, रनगढ़ किला, भूरागढ़ किला, बम्बेश्वर शिव मन्दिर आदि पौराणिक और ऐतिहासिक स्थल है। बान्दा मुख्यालय से 65 किलोमीटर दूर नरैनी क्षेत्र में विंध्य पर्वत श्रृंखला पर स्थित कालिन्जर भारत के सबसे विशाल और अपराजित दुर्ग में गिना जाता है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मन्दिर है, इनमें कई मन्दिर तीसरी से पान्चवी सदी गुप्त काल के हैं। यहां के शिव मन्दिर के बारे में मान्यता है की समुद्र मन्थन से निकले कालकूट विष को पीने के बाद भगवान शिव ने यही तपस्या कर उसकी ज्वाला को शान्त किया था वर्तमान में यह तो पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार एवम् अनुरक्षण में है वैसे जहां तक विकास का बात की जाए तो कालिन्जर तक पहुंचाने के आवागमन साधन शासन द्वारा बहुत कम है। केवल ऑटो, टेंपो या फिर निजी वाहन से ही कालिन्जर तक पहुंच सकते हैं। वैसे रोडवेज विभाग एक बस कालिन्जर तक सन्चालित होने का दावा करती है पर शायद ही कोई बस कालिन्जर के लिए चलाई जाती है। रेलवे लाइन के नाम पर सब कुछ जीरो है। वैसे कालिन्जर किला के नीचे 75 हेक्टेयर भूमि में इको टूरिज्म प्लेस बनाने का विचार है जिसका डीपीआर भेजा गया है कब स्वीकृत होगा? कब बनेगा? भगवान जाने?

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

गरीबी

जुलाई 2023 में गरीबों को लेकर नीति आयोग की रिपोर्ट में देवीपाटन मन्डल के तीन जिले गरीबों की फेहरिस्त में शीर्ष 3 पर है। कहा जा सकता है कि बहराइच श्रावस्ति बलरामपुर में औसतन आधी आबादी आज भी गरीब है जबकि बान्दा की 34प्रतिशत आबादी अभी भी गरीब है और बान्दा शीर्ष के 10 गरीब जिलों में शामिल है(34 फीसदी गरीब)। यह स्थिति उत्तर प्रदेश के 72 जिलों में शामिल उत्तर प्रदेश में शीर्ष 10 गरीब जिलों में बान्दा शामिल है तो क्या कहें?

कुपोषण

12 दिसम्बर 2016 के प्रकाशित अमर उजाला अखबार में वजन दिवस पर कुपोषित बच्चों को चिन्हित करने के लिए चले अभियान में बान्दा, अतर्रा नगर पालिका क्षेत्र समेत बड़ोखर, तिन्दवारी, महुआ, जसपुरा ब्लॉक तिन्दवारी और मटौन्ध नगर पन्चायत में लक्ष्य के मुकाबले 80 फ़ीसदी बच्चे आन्गनबाड़ी में आए। 96 हजार बच्चों में करीब 14000 बच्चे अति कुपोषित 16000 आन्शिक कुपोषित बच्चे पाए गए वचन दिवस पर 1.16 लाख बच्चे आने थे लगभग 15फीसदी बच्चे कुपोषित पाए गए जो इस इलाके के बारे में एक अच्छी चित्र प्रदर्शित नहीं करता है अर्थात पोषण के मामले में भी इलाका अति पिछड़ा रहा।

बान्दा विकास

मुख्यमन्त्री कार्यालय द्वारा सीएम डैशबोर्ड की पूरे वित्तीय वर्ष 2024–25 की आइजीआर एस रैंकिन्ग में बुन्देलखण्ड का हमीरपुर अव्वल है, जालौन नम्बर दो पर लेकिन यूपी के 75 जिलों में से पहले 10 में बान्दा कहीं भी खड़ा नहीं होता। जग जाहिर है की बान्दा में आने वाले सक्षम अधिकारी अपना समय पूरा कर निकल लेते हैं या फिर वह इतने अच्छे है कि बान्दा को सक्षम नहीं बना पाए, इसीलिए और पिछड़ा था पिछड़ा है और पिछड़ा ही रहेगा

जी आई टैग

उत्तर प्रदेश के 77 जी आई टैग उत्पादों के साथ उत्तर प्रदेश देश के पहले स्थान पर है, जबकि काशी क्षेत्र 42 जी आई के साथ दुनिया का जी आई है। प्राचीन स्थल बान्दा के नाम से ऐसा कोई प्रोडक्ट या उत्पाद नहीं है जिसे जी आई टैग मिला हो बुन्देलखण्ड का कठिया गेहूं जी आई टैग में आया है लेकिन यह कुछ जिलों को मिलाकर बनाया गया एक क्षेत्र है। बान्दा का कोई उत्पाद जी आई टैग लायक नहीं है? यहां एक भी उत्पाद ऐसा ना हो जिसे जी आई टैग मिल सके, क्या यह सम्भव है? लेकिन इसके लिए सक्षम प्रशासनिक अधिकारियों के द्वारा विशेष श्रम किया जाता है जो कि सम्भवतः नहीं हो पाया।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी इस क्षेत्र की आलोचना गरीबी व पिछड़ेपन जनित अपराध स्थिति को देखते हुए ही की है:–

द्वितीय सोपान, अयोध्याकाण्ड । पृष्ठ 607 चौ०–

तुम्ह प्रिय पाहुन बन पग धारे। सेवा जोग न भाग हमारे ।।
देव काह हम तुम्हहिं गोसाँई। ईधन पात किरात मिताई।।1।।

आप प्यारे मेहमान वन में आये हैं, सेवा के योग्य हमारे भाग्य ही नहीं हैं। हे स्वामिन हम आप को क्या देंगे? किरातों की मित्रता लकड़ी और पत्तों की है ।।1।।

यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । लेहिं न बासन बसन चोराई ।
हम जड़–जीव जीव–गन–घाती । कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ।।2।।

पिछड़ापन– आत्महत्याए– कारण व समाधान **Backeardness - Suicide, Causes & solution**

हमारी यही बहुत बड़ी सेवकाई है कि आप के बर्तन और कपड़े न चुरा लेवें । हम सब जड़–जीव हैं, भोजन हेतु भोज्य जीवो की हत्या करनेवाले, कुटिल, कुचाली, कुबुद्धी और नीच जाति? है।

पाप करत निसि–बासर जाहीँ । नहिँ पट कटि नहिँ पेट अघाहीं ।।
सपनेहुँ धरम–बुद्धि कस काऊ । यह रघुनन्दन–दरस प्रभाऊ ।।3।।

भोजन हेतु भोज्य जीवो की हत्या पाप? कैसे? भोजन हेतु गरीब का शिकार पाप,,, और बडे लोगों के जीवहत्या शिकार,,?? क्या व्याख्या है। भोजन हेतु भोज्य जीवो की (शिकार)हत्या ही करते रात–दिन बीतते हैं, (गरीबी व पिछड़ेपन के कारण)कमर में वस्त्र नही और न पेट भर भोजन पाते हैं।

सिद्ध होता है कि अपराध स्थिति गरीबी के कारण उपजी है। जो पिछड़ेपन के कारण है।

इसके अलावा लूटपाट, लूटने की कविताओं में काफी कुछ लिखा गया हैः–

बैरागिया नाला जुल्म जोर, जहां साधु वेश में रहत चोर ।
जब तबला बाजे धीन–धीन, तब एक–एक पै तीन–तीन ।।

कहने का मतलब कि साधु वेश में भी यहां किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता और वह चोर डकैत भी हो सकता है और होता रहा है। और आज भी है। क्या रामराज्य है राम के समय में

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार
1 विनीता पेज 14
2 बुन्देलखण्ड एक्शनएआइडीइन्डियाडोटओर्ग 2018/06
3 उत्तरप्रदेशगर्वट जीओवीटी डाटा
4 बुन्देलखण्ड विक्रम तोमर
5 बुन्देलखण्ड रिसर्च पोर्टल
6 बुन्देलखण्ड रिसर्च ग्रुप फोर डवलपमेंट बरगड
7 पन्चायत अध्ययन सन्दर्भ केन्द्र (पास्क) बलखण्डीनाका बान्दा, उत्तर प्रदेश
8 बान्दा ब्लोग
9 बुन्देलखण्ड पिछडा क्यों
10 कृष्णार्पित सेवा सन्स्थान
11 पन्चायत अध्ययन सन्दर्भ केन्द्र
12 बान्दा हिस्ट्री बान्दा
13 पिछड़ा क्यों
14 बुन्देलखण्ड ट्री प्लान्टेशन
15 पर्यटन के लिए
16 11 अप्रैल 2025 को हिंदुस्तान अखबार में प्रकाशित समाचार के अनुसार